राज कॉमिक्स

कर्फ्यू डोगा

एक समसामयिक कॉमिक्स

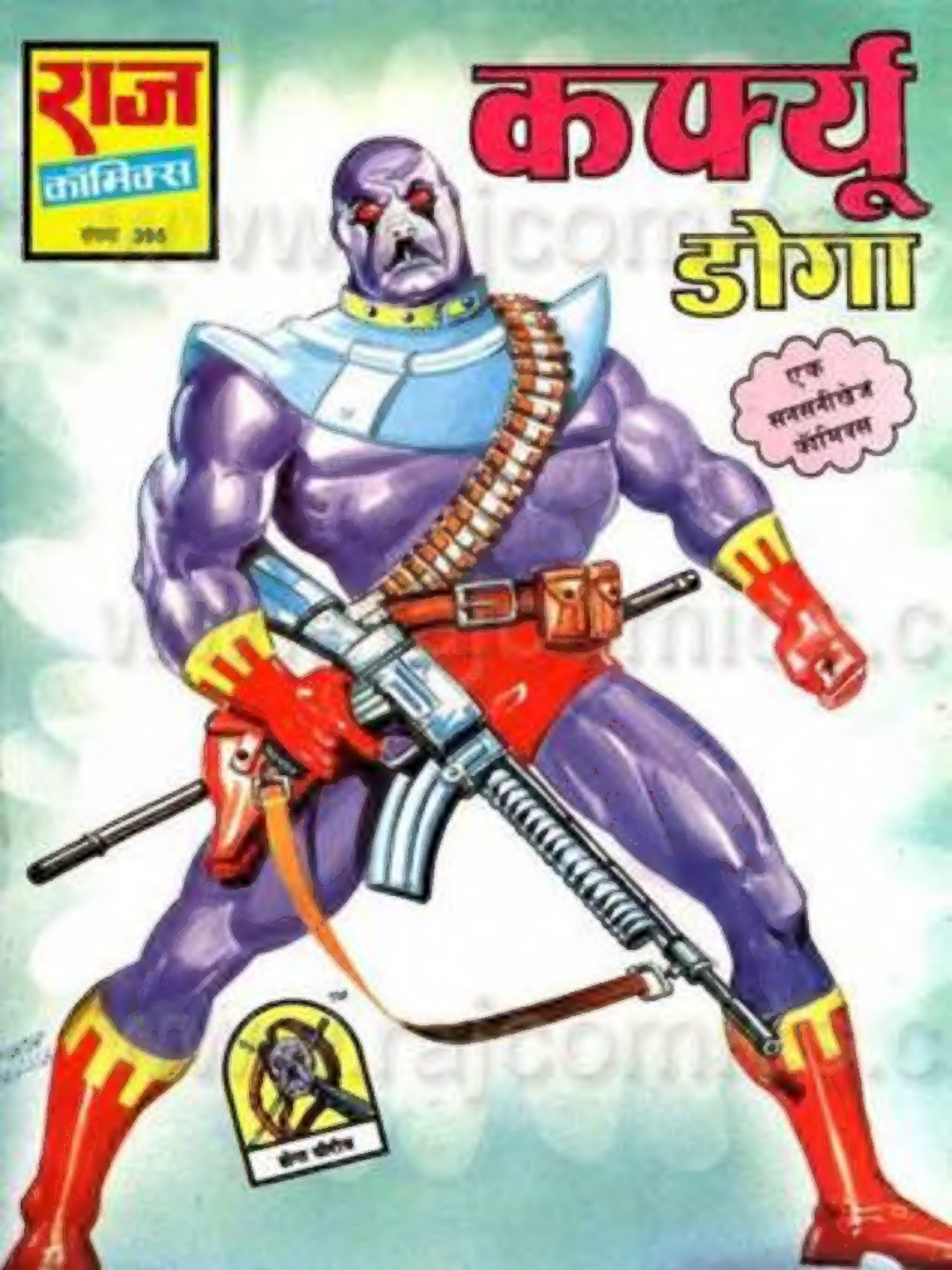

कफ़र्न

कथा : संजय गुप्ता
पटकथा : तरुण कुमार वाही

चित्रांकन : मनु

सम्पादन : मनीष गुप्ता

वह समस्याओं को 'हल' नहीं करता, उन्हें 'जड़' से उखाड़ता है!!?

इन आंखों ने देखा है इन्सान और इन्सानियत का वीभत्स रूप। घृणा और दरिन्दगी का नंगा नाच! कुत्तों की तरह नोचे जाते इन्सानों के जिस्म!

और अब कानून तोड़कर मैं करूंगा कानून की हिफाजत। बनाऊंगा खुद अपना कानून। जो अंधा नहीं होगा। जो अंधा नहीं होगा।

दर्द का ऐसा तूफान था उसके सीने में, जो ज्वालामुखी बनकर फूटा।

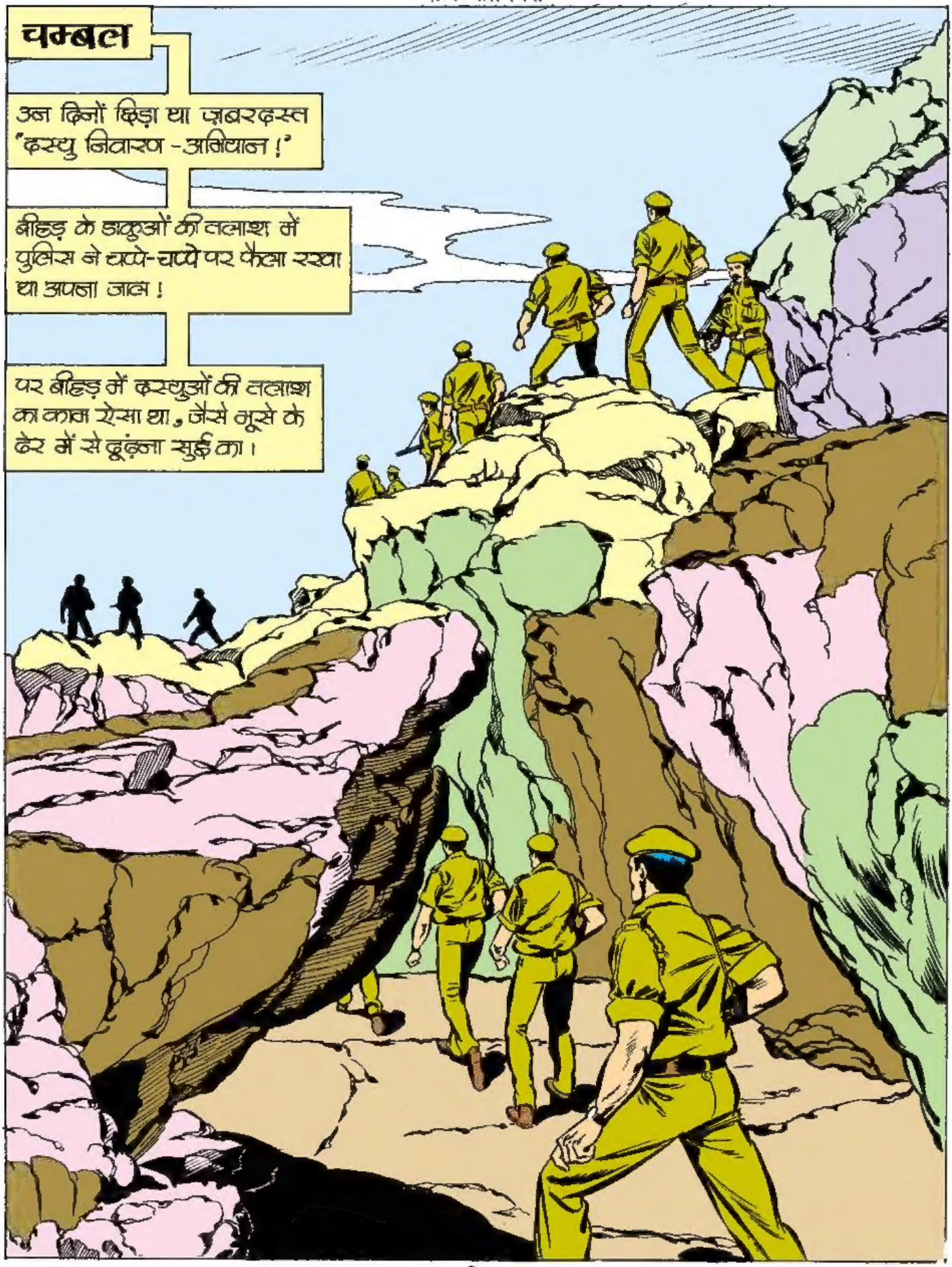
चम्बल
उन दिनों छिड़ा था ज़बरदस्त "दस्यु निवारण - अभियान !"
बीहड़ के डाकुओं की तलाश में पुलिस ने चप्पे-चप्पे पर फैला रखा था अपना जाल !
पर बीहड़ में दस्युओं की तलाश का काम ऐसा था, जैसे भूसे के ढेर में से ढूंढ़ना सुई का।

तूफान की तरह उड़ा आ रहा था
दस्युओं का वह दल...

धाऽऽऽ

...दस्यु सरदार डाकू हलकान सिंह के नेतृत्व में-

हलकान हो....

हलकान हो....

हलकान हो...

हलकानऽऽऽ सिंऽऽऽ ह

हाहाहा

बीहड़ का शहंशाह था
हलकान सिंह।

हलकान हो....

हलकान हो....

हलकान हो....

...बीहड़ की तंग गलियों
का बादशाह !

धड़ धड़ धड़ धड़

डाकुओं का क्या भरोसा, कभी भी
टूट पड़ें गांव पर।

अरे डाकू!

डाकू!

डाकू!

हलकान आया रे!

गांव में घुसकर गदर मचा दिया डाकुओं ने। और तबाही मचा कर चल पड़ा बीहड़ों का शहंशाह।

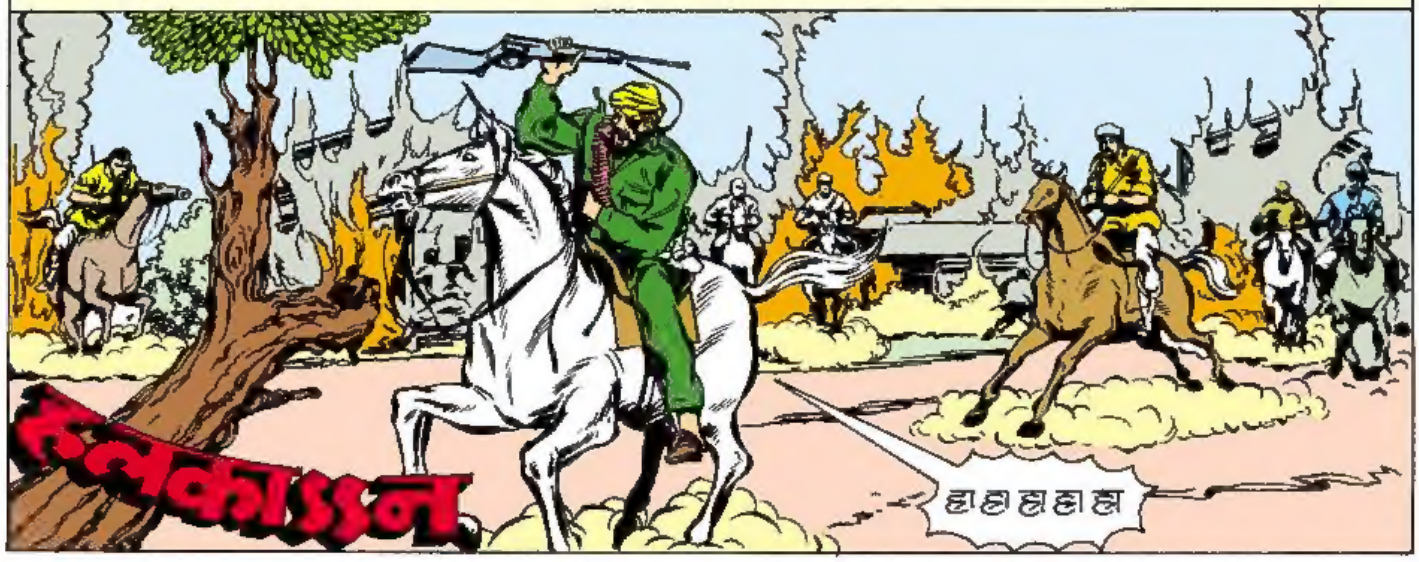

पर गांव से निकल भी न पाये थे वो कि उनका स्वागत किया मौत के शोलों ने।

बड़ा जबरदस्त जाल फैला रखा था पुलिस ने –

बुरी तरह फंसा था हल्काल दस्यु शिरोह।

धुआंधार 'धूमधड़ाम' करके निकल भाग रहा था दस्युराज

अकेला ही बच सका दस्युराज हलकान सिंह -

इसी पल उछल पड़ा वो।

उंवा... उंवा...

?

चौंक कर सिर उठाया शैतान ने -

बच्चा!? बच्चा!?

मस्तक पर पड़ी केवल कुछ सलवटें -

उंवा उंवा

कूड़े के ढेर पर कौन फेंक गया इसे?

इन्सानियत का कैसा रूप था ये?

सोच क्या रहा है हलकान सिंह! पुलिस चप्पे-चप्पे पर फैली हुई है। पकड़ा जावेगा तू।

तुझे बचा सकता है ये बच्चा!

सचमुच बचा सकता है मुझे ये कचरे का डिब्बा!

झपटकर उठा लिया उसने बच्चे को।

और तभी घेर लिया पुलिस पार्टी ने –

हलकानसिंह! हथियार फेंक, आत्म-समर्पण कर दे।

रिवॉल्वर निकाल कर सटा दिया उसने उस मासूम के माथे से।

उवां.... उवां....

इंस्पेक्टर! रिवॉल्वर फेंक दो अपने, नहीं तो इस बच्चे को खत्म कर दूंगा मैं।

हथियार तो नहीं फेंके किसी ने, किन्तु बेबस तो हो ही गये थे।

उवां।

अबे चुप हो जा। क्या उवां-उवां लगा रखी है।

देखते ही देखते घोड़े पर चढ़ बैठा हलकान।

और दौड़ा दिया घोड़ा उस शैतान ने पुलिस को धूल चटाने के लिए –

हा हा हा हा! हलकान को पकड़-ना नहीं आसान।

बच्चा उसके लिए बड़ा किस्मतवाला साबित हुआ।

और यह बात हलकान भी भली भांति समझ गया था।

वाह बेटा! तू तो नसीब बन कर आया हलकान का, पर है तो तू साले कचरा पेटी ही ना। यानी हराम की औलाद।

लेकिन इस बात से अब हलकान को कोई मतलब नहीं था

चल, पड़ा रहियो एक तरफ, ऐसे ही पल जाएगा जैसे गली में कुत्ते पलते हैं। आवारा कुत्ते। अब मुझे तो अपना गैंग बनाना है दोबारा। जो साला तबाह हो गया।

अति संवेदनशील इलाके से गुजर रही थी रोडवेज की वो बस।

जहां पलक झपकते कुछ भी अप्रत्याशित घट सकता है

ओए... रोड पे पत्थर किसने रख दिया?

बस में ही सवार था वह यात्री भी -

TERRORIST

खबरदार! कोई अपनी जगह से हिला तो शूट कर दूंगा!

जहर भरा था उस आतंकवादी का स्वर-

बस को कच्चे रास्ते पर उतार दे ड्राइवर, वरना खोपड़ी खोल दूंगा तेरी।

हिचकोले खाती बस रुकी एक निर्जन स्थान पर -

और -

सबको बस से नीचे उतार दे लोहासिंह!

मौत की दहशत की सनसनी सब के चेहरों पर दिखाई पड़ रही थी।

उतरो नीचे। और कोई हंगामा नहीं। कोई आवाज नहीं।

पंक्तिबद्ध खड़ा कर दिया गया सबको–

नेता था वो शायद उनका–

जागीरा!

और जागीरा समझ गया अपने नेता का संकेत

मुंह खोल दिया उसने अपनी ए-के-47 एसाल्ट चीनी गन का–

ड ड ड ड ड

धफ

आह

वहां तक पहुंचकर हाथ रुक गए जालिम के।

जागीरा!

नेता का संकेत पाकर अन्तिम लाश भी गिरा दी दरिन्दे ने

ड ड ड

आंह

उसके बाद जमकर लूटा गया लाशों को –

पर्स में काफी माल है। मोटा माल लेकर घूमने निकला था ये अपनी घरवाली के साथ।

अंगूठी और चेन। वाह!

और खड़ा हंस रहा था शैतान –

हा हा हा! डाकू हुक्कानसिंह की ये हरकत पुलिस को आतंकवादियों की हरकत लगनी चाहिए।

सरदार! इसके मुंह में दो दांत सोने के लगे हैं।

उखाड़ ले लोहासिंह, उखाड़ ले। हा हा हा हा।

पत्थर से तोड़ डाले शैतान ने दोनों दांत भी –

न छूट

बेरहम कसाई थे सबके सब

सरदार! इस कमीना की अंगुली में फंस गई है हीरे की अंगूठी।

ले। तू भी काट डाल अंगुली ही। हीरे की अंगूठी का क्या करेगी अब ये लाश। हा हा

और आंखों में आंसू लिए हैवानियत का खेल देख रहा था तो एक बालक भी, जिसके सीने में उठ रहा था, नफरत का सैलाब।

क्रोध से भिंची थीं जिसकी मुट्ठियां। हुक्कानसिंह अपने इस नसीब को हर अपराध में अपने साथ रखता था।

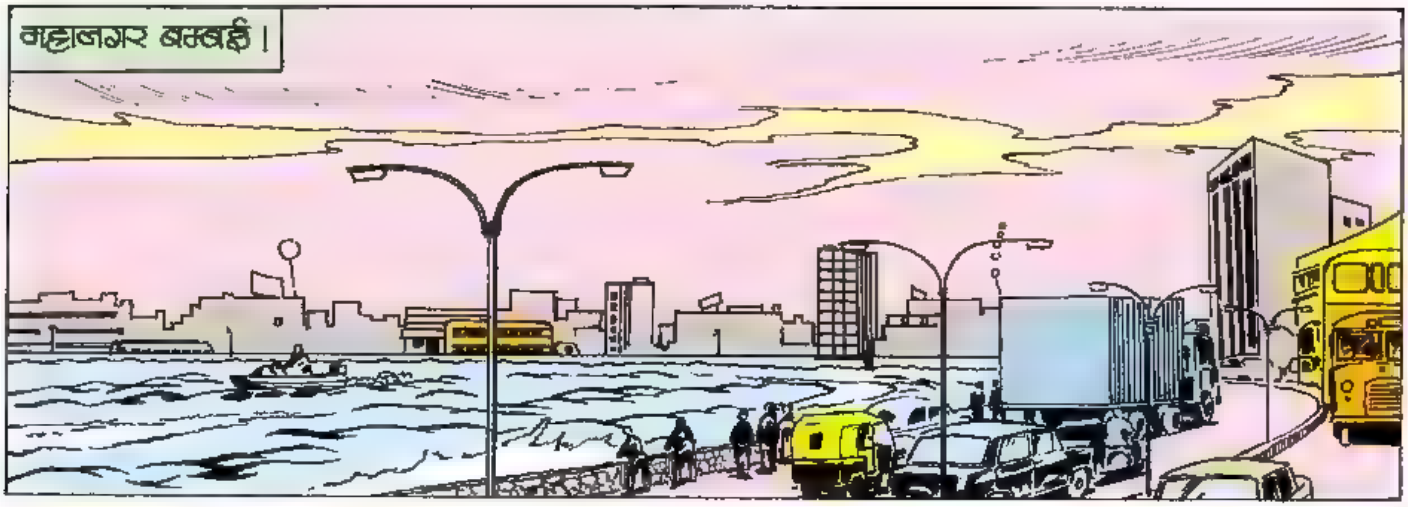
महालगर बम्बई।

एक विशेष पान-मसाले के विज्ञापन ने धूम मचा रखी थी महालगर में-
पान खराब
पान खराब
बस एक ही 'पाउच' में हो जाएंगे आप इसके दीवाने।

सचमुच ढूंढ़ रहे थे लोग पान-खराब को।
पता नहीं शहर के किस कोने में मिल रहा है ये पान-खराब पान मसाला।
हर जगह मिल रहा है तो बस विज्ञापन।

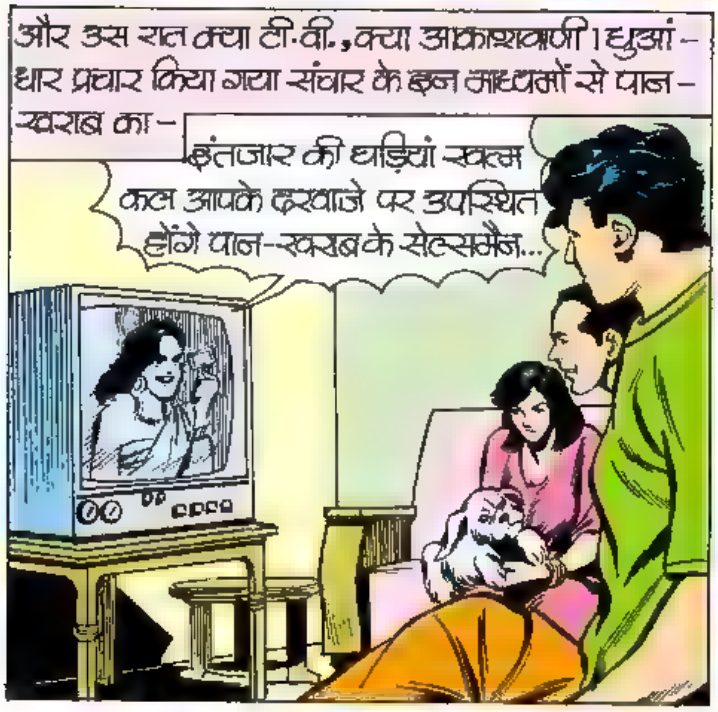
और उस रात क्या टी.वी., क्या आकाशवाणी। धुआंधार प्रचार किया गया संचार के इन माध्यमों से पान-खराब का-
इंतजार की घड़ियां खत्म कल आपके दरवाजे पर उपस्थित होंगे पान-खराब के सेल्समैन...

...जो आपको देंगे पान-खराब। वो भी बिल्कुल मुफ्त।

पूरे शहर में उस दिन लोगों की जुबान पर था केवल एक ही नाम –

पान खराब !

सिर्फ एक पाउच ? ही ही ही। एक से मेरा क्या होगा ?

जो आप दो दीजिए।

वाह ! पान - खराब

उसके बाद विज्ञापन हो गए गायब।

क्योंकि दूसरे दिन से लोग खुद ही पहुंच रहे थे पान-खराब के पास।

पान-खराब देना। पूरा डिब्बा ही दे देना। मेरा तो पूरा परिवार ही मांग रहा है कसे।

LUCKY MAN ये आखिरी है।

सचमुच दीवाने से हो गए थे लोग।

पान-खराब नहीं है ! क्या बकते हो ? काला बाजारी करोगे पान-खराब की ?

उफ !

सचमुच नहीं है।

बच्चे तक अछूते नहीं थे पान-खराब के जाल से –

वाह ! पान – खराब अब आयेगा मजा।

महामजा ! ही ही ही।

महानगर में पान-खराब पान मसाले की धूम यूं ही नहीं मची थी।
क्या खबर लाए हो लोहासिंह ?
पान-खराब ने जादू सा कर दिया है बम्बई नगरी पर। पान सि-गार, कन्चूर, पान चिराग जैसे मशहूर पान मसाले अपने ग्राहक ढूंढ़ रहे हैं...

...और पान-खराब के दीवाने ढूंढ़ रहे हैं अपना पान-खराब। ये कमाल ही तो है।
सुनते हुए खूनी चमक आ रही थी उसके चेहरे पर

अपने पीले पड़े पपड़ी जमे दांतों को दिखाता भया-नक ढंग से हंसा वो।
यहां तक पहुंचने के लिए हलकानसिंह ने बहुत लम्बा सफर तय किया है।

ये सफर कुछ और छोटा हो सकता था सरदार... अगर वो कचरे का डिब्बा हमारे दल के साथ दगा न करता।

प्रतिशोध की अग्नि सुलग रही थी लोहा सिंह की आंखों में -

जबड़े भिंच गए थे हवलदार सिंह के भी -

जागीरा... शातिर सिंह... और हमारे दल के सभी साथी उस कचरे के डिब्बे की गद्दारी की ज्वाला में भस्म हो गए सरदार!

अगर समय रहते आप और मैं निकल न जाते तो पुलिस का कितना लोहा हमारे जिस्मों का हिस्सा बन गया होता।

फिर यहां महानगर में आकर जया दल बनाने में कितने बरस लग गए हमें।

बस करो लोहा - सिंह, बस करो जख्मों पर नमक मत छिड़को

क्रोध से वार करने लगी हवलदार सिंह की।

वो कचरे का डिब्बा आज भी याद है मुझे। देखो, देखो इस बेल्ट पर लगी केवल एक गोली को और पूछो कि ये क्यों लगी है यहां? पूछो लोहा सिंह, पूछो।

इस "गोली" पर उसी "कुत्ते" का नाम लिखा है।

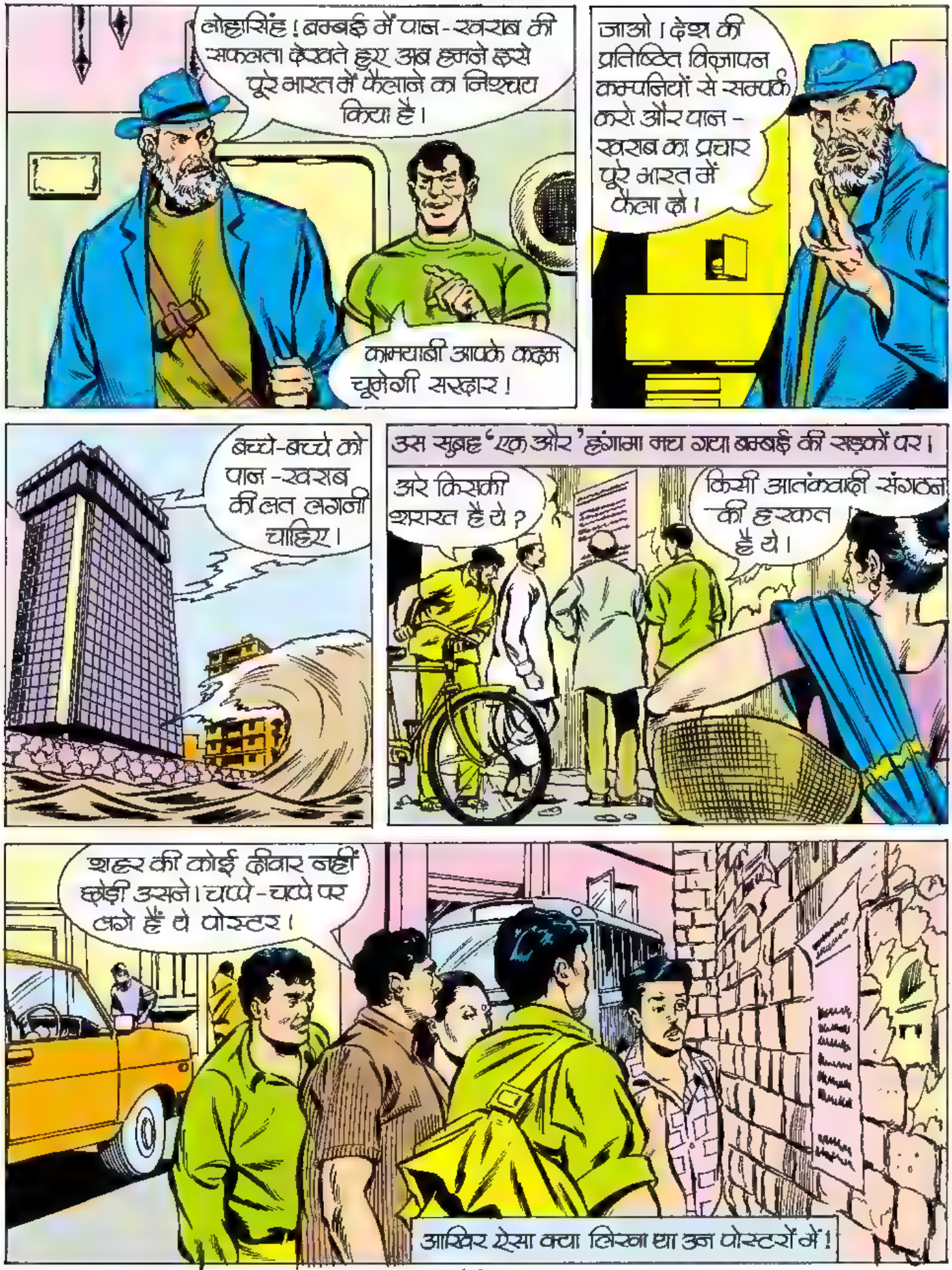
लोहासिंह ! बम्बई में पान-खराब की सफलता देखते हुए अब हमने इसे पूरे भारत में फैलाने का निश्चय किया है।
कामयाबी आपके कदम चूमेगी सरदार !
जाओ। देश की प्रतिष्ठित विज्ञापन कम्पनियों से सम्पर्क करो और पान-खराब का प्रचार पूरे भारत में फैला दो।
बच्चे-बच्चे को पान-खराब की लत लगनी चाहिए।
उस सुबह 'एक और' हंगामा मच गया बम्बई की सड़कों पर।
अरे किसकी शरारत है ये ?
किसी आतंकवादी संगठन की हरकत है ये।
शहर की कोई दीवार नहीं छोड़ी उसने। चप्पे-चप्पे पर लगे हैं ये पोस्टर।
आखिर ऐसा क्या लिखा था उन पोस्टरों में !

मंत्री हलकट सिंह की मौत का पैगाम है ये!

कल दो बजे उसके बंगले को मैं खुद आकर बारूद में बदल दूंगा। दुनिया की कोई ताकत न बचा पायेगी उसे।

कल ठीक दो बजे!

पूरे शहर में लगे उन पोस्टर्स ने प्रशासन की नींद हराम कर दी -

व्हाट नॉन सेन्स? रातों-रात शहर पोस्टरों से रंगीन हो उठा और 'पुलिस' नहीं जानती कि ये हरकत है किसकी?

खीज उठे थे पुलिस कमिश्नर मिस्टर त्रिपाठी।

व्हाट नॉन सेन्स?

खैर। पोस्टर्स लग चुके हैं। जितनी बदनामी होनी थी पुलिस डिपार्टमेन्ट की हो चुकी। अब मैं आप लोगों से पूछना चाहता हूं कि कल दो बजे के लिए आपने क्या व्यवस्थायें की हैं मंत्रीजी की सुरक्षा के लिए?

सर! कहीं किसी ने मजाक तो नहीं किया?

व्हाट? व्हाट नॉन सेन्स इंस्पेक्टर? पूरे शहर को पोस्टर्स से रंग देनेवाला इंसान मजाक करेगा!

सर! मेरे विचार में तो कल मंत्रीजी के निवास के पांच मील दूर तक कर्फ्यू घोषित किया जाए ...

....ताकि हमें मंत्री-जी को सुरक्षा देने में कोई दिक्कत महसूस न हो। और अगर वो कथित हत्यारा कर्फ्यूग्रस्त एरिया में दिखाई पड़े तो उसे फौरन गिरफ्तार किया जा सके!

इसी पल घनघना उठी फोन की घण्टी और—
हैलो!
हम मंत्री हलकट-सिंह बोल रहे हैं कमिश्नर त्रिपाठी!
ओह! मंत्रीजी आप...

हमारी सुरक्षा के लिए क्या कदम उठा रहे हैं आप?
व्हाट नॉन...वो..वो..म... मंत्रीजी! कल दस बजे से आपके निवास के पांच मील दूर तक कर्फ्यू घोषित कर दिया जायेगा, और...

...और 'बस' कमिश्नर! इसके अलावा दूसरी कोई व्यवस्था नहीं करनी है आपको।
व्हाट नॉन सेन्स? मेरा मकसद है। य...यह आप क्या कह रहे हैं मंत्रीजी?

कर्फ्यूग्रस्त एरिये में दो बजे के बाद तुम्हारा कोई भी पुलिसिया नहीं होना चाहिए कमिश्नर! ये हमारा 'आर्डर' है।
नॉन सेन्स!

कर्फ्यू के ऐलान ने सनसनी फैला दी—

सारा क्षेत्र आधे घण्टे में खाली कर दीजिए। दस बजे के बाद कर्फ्यू लगाया जा रहा है।

POLICE

USE

चिक.... चुप! हरी-अप, दस बजे के बाद कर्फ्यू ग्रस्त एरिया में दिखते ही गोली मार दी जायेगी।

सचमुच आधे ही घण्टे में पूरे इलाके में लग गया था कर्फ्यू

कैसी अजीब बात है। तांत्रिकों पर हमला 'उसने' करना है दो बजे। और कर्फ्यूग्रस्त इलाके में हमारी ड्यूटी है पौने दो बजे तक।

ठीक पौने दो बजे चप्पा-चप्पा वीरान हो गया—

इतना गहरा सन्नाटा छा गया कि सुई भी गिरे तो आवाज हो बम सी।

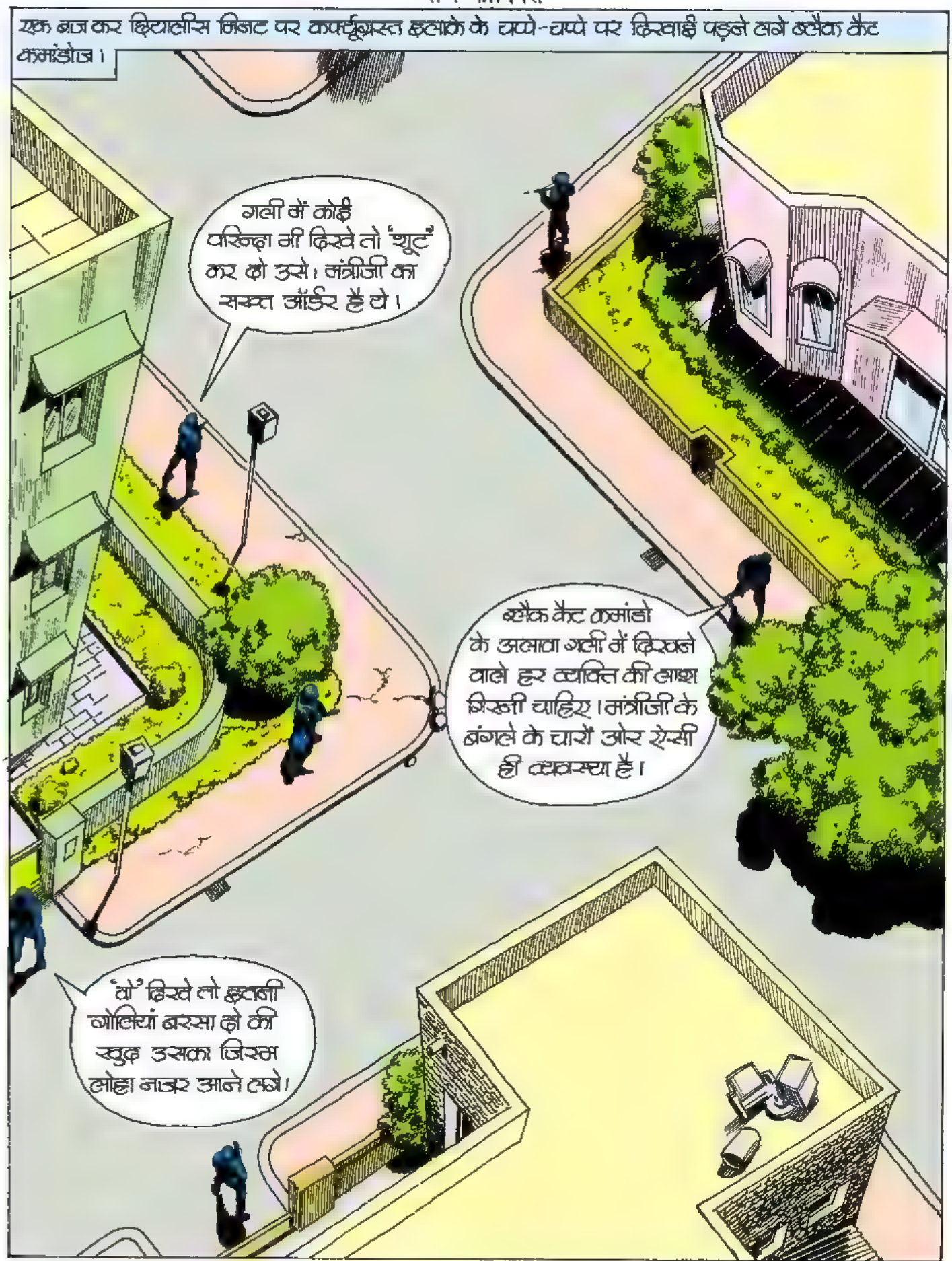
एक बज कर छियालीस मिनट पर कर्फ्यूग्रस्त इलाके के चप्पे-चप्पे पर दिखाई पड़ने लगे ब्लैक कैट कमांडोज।
गली में कोई परिन्दा भी दिखे तो 'शूट' कर दो उसे। मंत्रीजी का सख्त ऑर्डर है ये।
ब्लैक कैट कमांडो के अलावा गली में दिखने वाले हर व्यक्ति की लाश गिरनी चाहिए। मंत्रीजी के बंगले के चारों ओर ऐसी ही व्यवस्था है।
'वो' दिखे तो इतनी गोलियां बरसा दो की खुद उसका जिस्म लोहा नजर आने लगे।

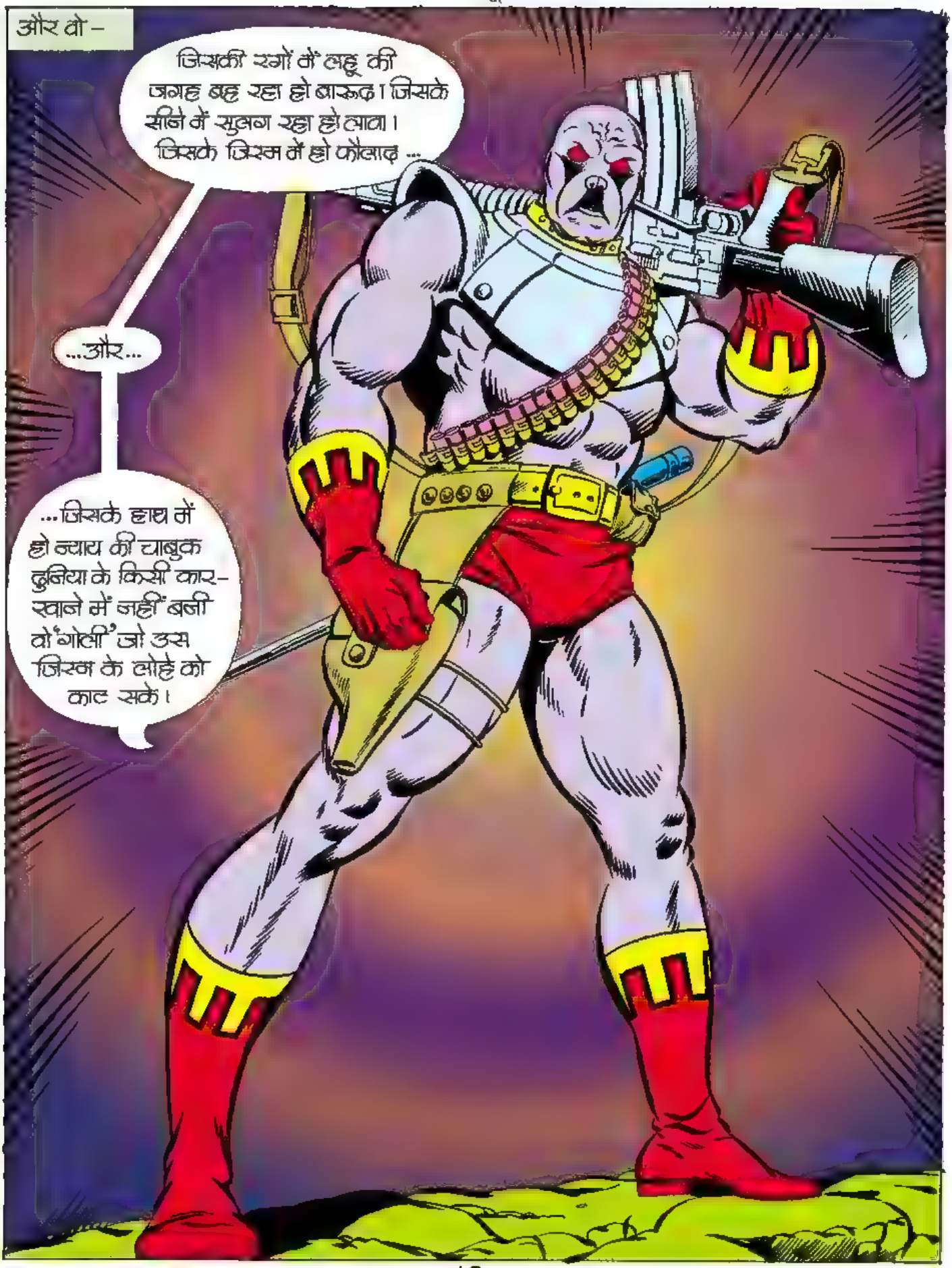
और वो –
जिसकी रगों में लहू की जगह बह रहा हो बारूद। जिसके सीने में सुलग रहा हो लावा। जिसके जिस्म में हो फौलाद ...
...और...
...जिसके हाथ में हो न्याय की चाबुक दुनिया के किसी कार-खाने में नहीं बनी वो 'गोली' जो उस जिस्म के लोहे को काट सके।

क्या था वो इंसान ? उफ ! पच्चीसवीं मंजिल से नीचे कूद पड़ने वाले उस 'रहस्य' को हम 'पागल' न कहें तो क्या कहें ?

मगर.... पांव जमीन से जा लगे जलजले के -

धम

सही-सलामत ही नीचे उतर आया था वो !

खौफनाक सन्नाटे में कदमों की आवाज ने ही नहीं, बल्कि खुद उसने भी उछल दिया गश्त करते ब्लैक कैट कमांडो को--

ओह ! यह क्या ? कौन है वो ?

ऊपर से कहां से आया ?

इसका इलाज ! यही है वो ।

KILL HIM !

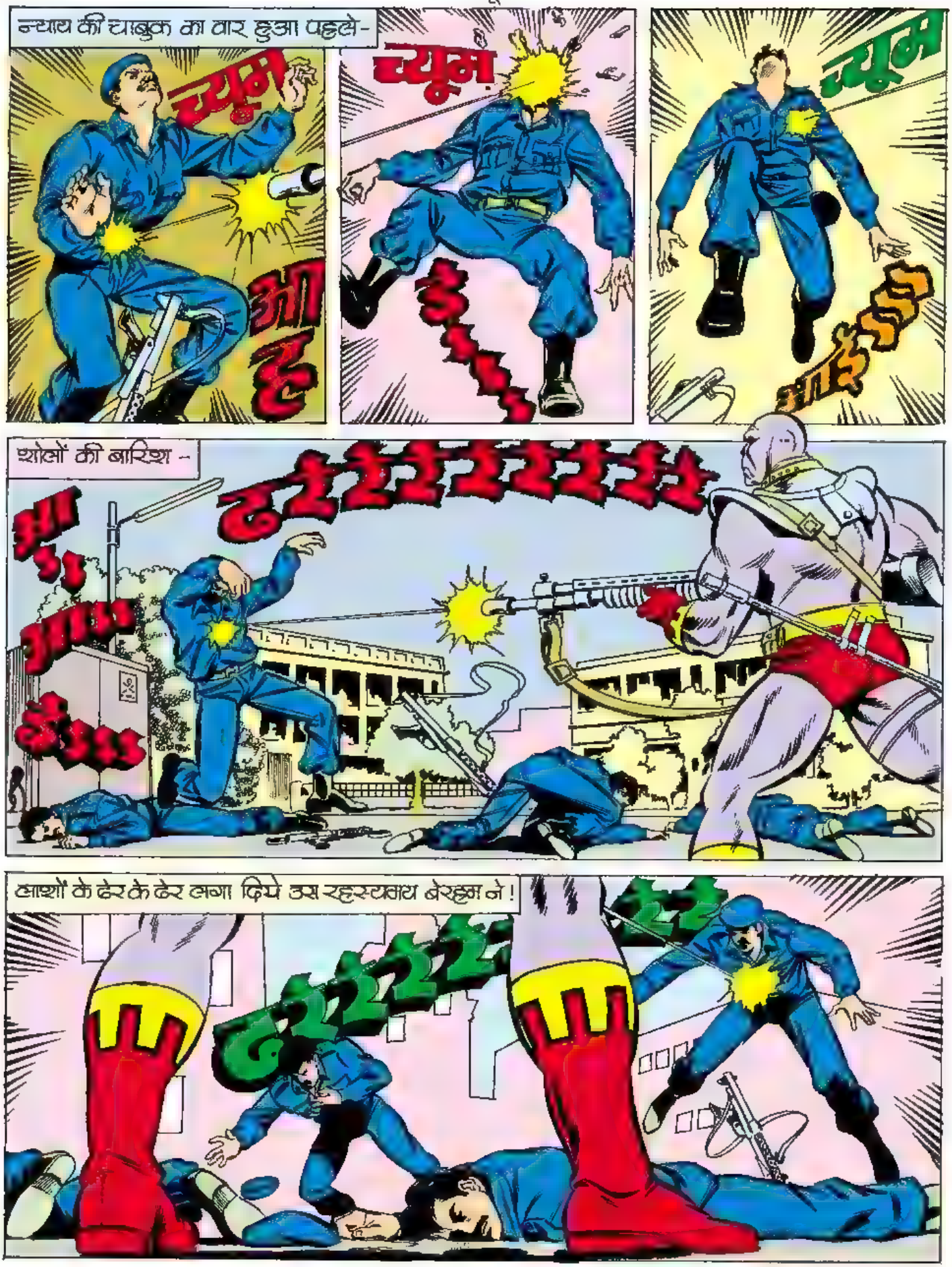
न्याय की चाबुक का वार हुआ पहले-
च्यूम
आ
ह
च्यूम
च्यूम
शोलों की बारिश -
ह ह ह ह ह ह ह ह
धा
धायं
धायं
लाशों के ढेर के ढेर लगा दिये उस रहस्यमय बेरहम ने !
ढ ढ ढ ढ

लाशों की सड़क पर आगे बढ़ता चला गया वो -

धड़ाधड़

एक क्षण के लिए भी बन्द न होने दी उसने शोलों की बारिश।

दहल उठे थे इमारतों में बन्द लोग -

बाहर लगातार भीषण गोलीबारी हो रही है। एक इंसान को खत्म करने के लिए कितनी गोलियां चलाएंगे ये गार्ड्स!

किसी की हिम्मत न हो रही थी खिड़की से बाहर तक झांक लेने की -

उफ! गोलियों के धमाकों से कानों के परखचे उड़े जा रहे हैं।

धनाक धड़ाधड़

दूर - दूर तक की निस्तब्धता भंग हो रही थी -

धड़ाधड़

उधर चल रही हैं गोलियां। हुर्रा आप

टेलीस्कोपिक गन और भी घातक साबित हुई -

धांय धांय

धड़ाम

पर तूफान को भी रोक सका है कोई।

धिक्कार

मंत्री हलकानसिंह के बंगले तक जा पहुंचा वो ज्वालामुखी-

अरे! ये तो यहां तक आ पहुंचा।

वह गोला हमारी ओर आ रहा है। उफ! भागो।

सरसराता हुआ गोला आकर मेनगेट के परखच्चे उड़ाता चला गया-

धुड़म

कर्फ्यू के सन्नाटे में गूंज रही उस जालिम के बूटों की आवाजें बंगले के ठीक सामने पहुंच कर रुक गईं-

इमारत में अब उल्लू बोल रहे थे। जीवन का नामोनिशान तक नहीं था उसमें

मंत्री हलकट सिंह पहले ही खाली कर चुके थे बंगला।

चेहरे पर पत्थर सी कठोरता। जबड़े भिंचे हुए। आंखों से टपकता खून। उफ! क्या करने जा रहा था बेरहम?

बमों की लड़ी को तू फेंका था उसने, जैसे बच्चे पटाखों की लड़ी फेंकते हैं दीवाली पर –

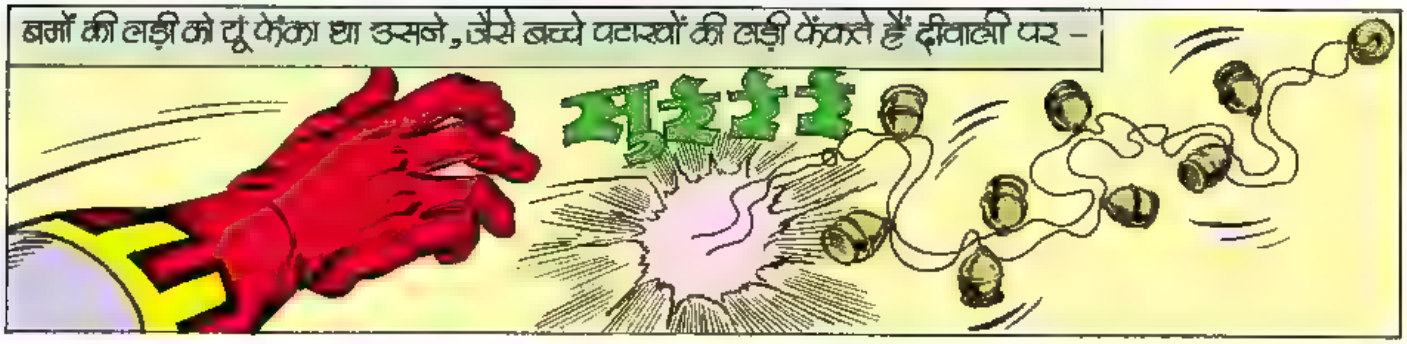

बड़े ही इत्मिनान के साथ वापस जाने के लिए पलट गया 'शैतान' –

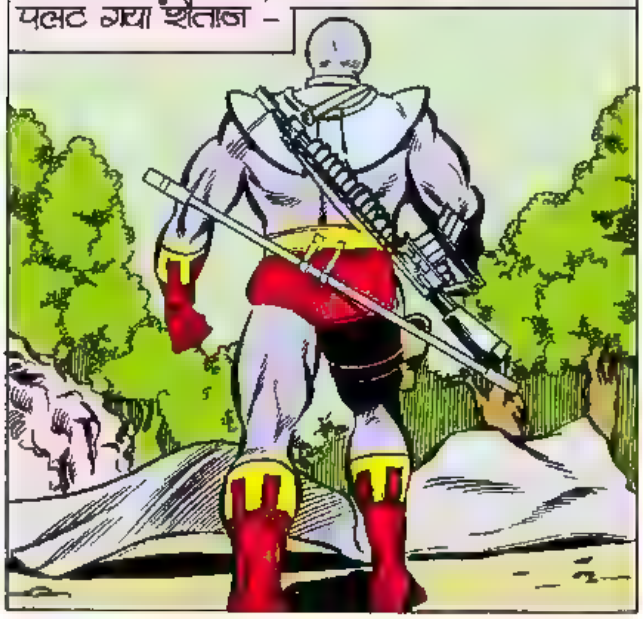

जबरदस्त धूमधड़ाम के साथ बंगले के उड़ते परखच्चे देखने के लिए मुड़ा तक नहीं था कम्बख्त।

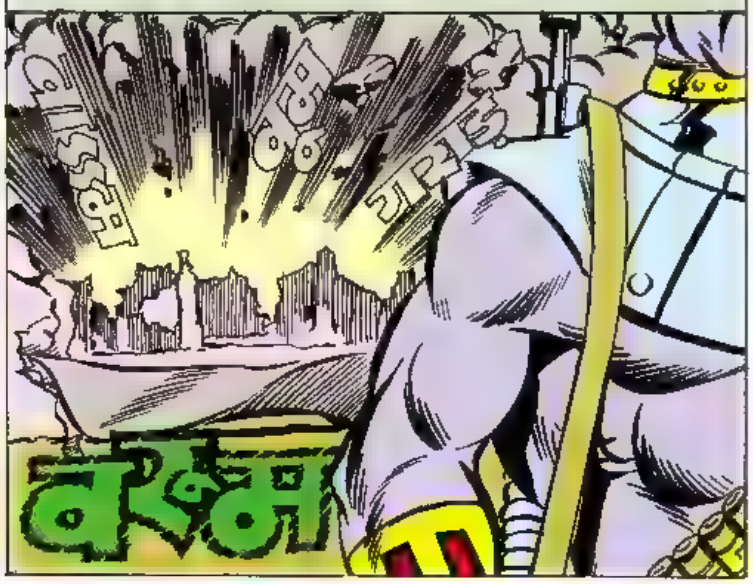

फिर ठीक उसी इत्मिनान के साथ नीचे आ खड़ा हुआ वह, जहाँ से मौत का ये छोटा सा सफर शुरू किया था उसने।

और अगले ही पल वातावरण में गूंज उठीं कई सायरनों की आवाजें –

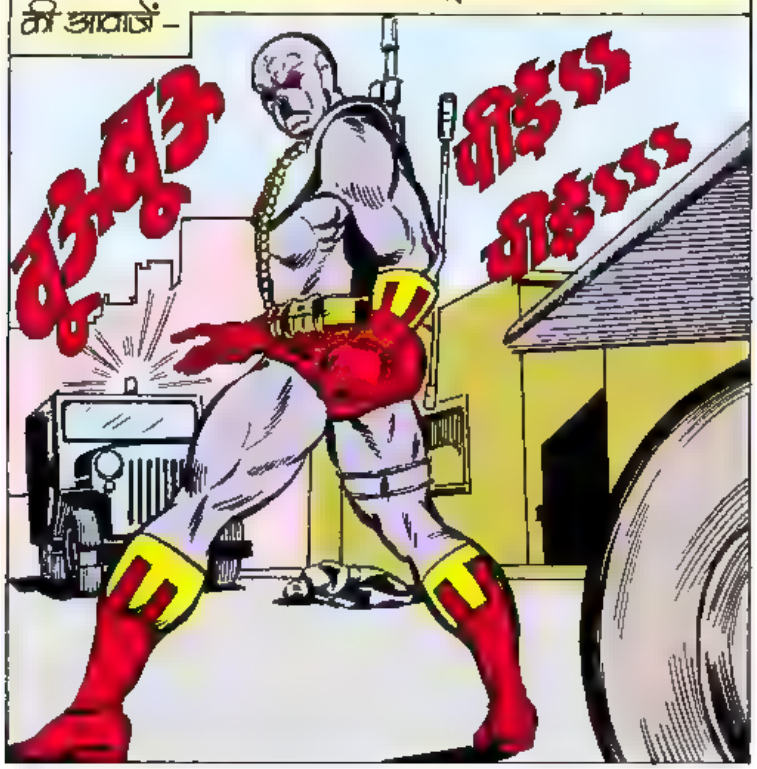

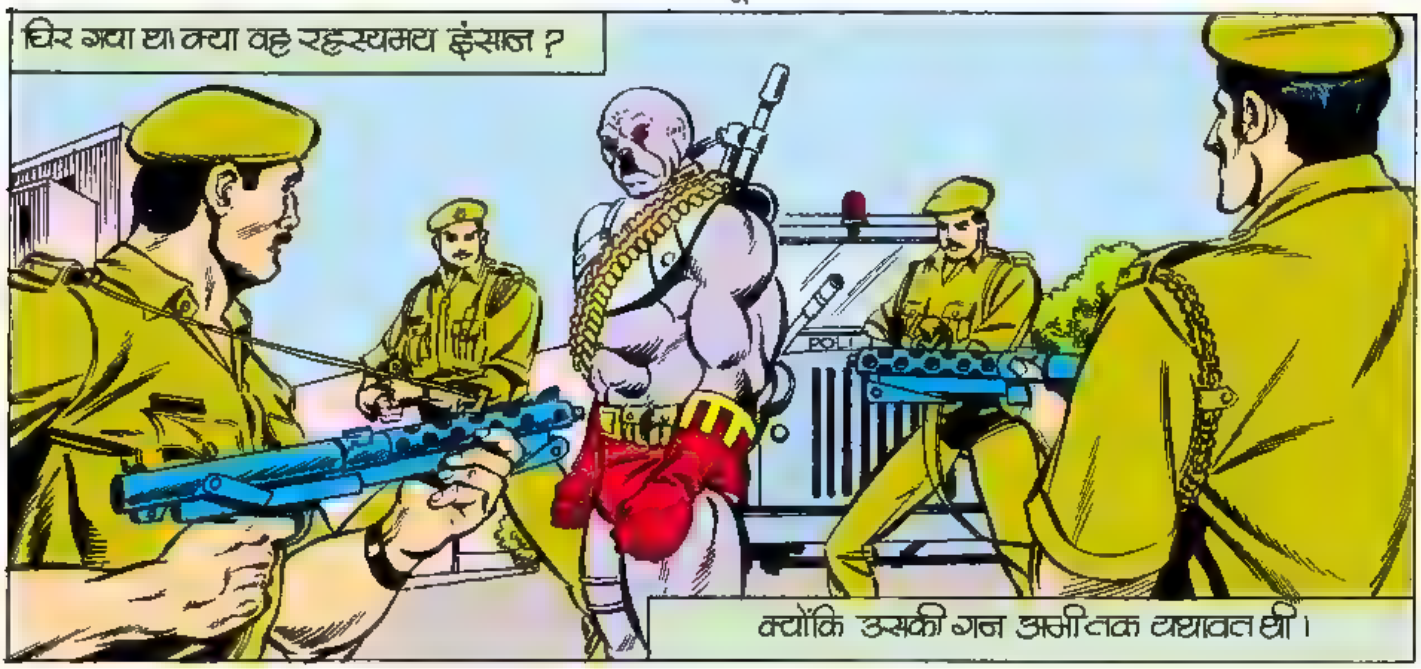
घिर गया था क्या वह रहस्यमय इंसान ?
क्योंकि उसकी गन अभी तक यथावत थी।

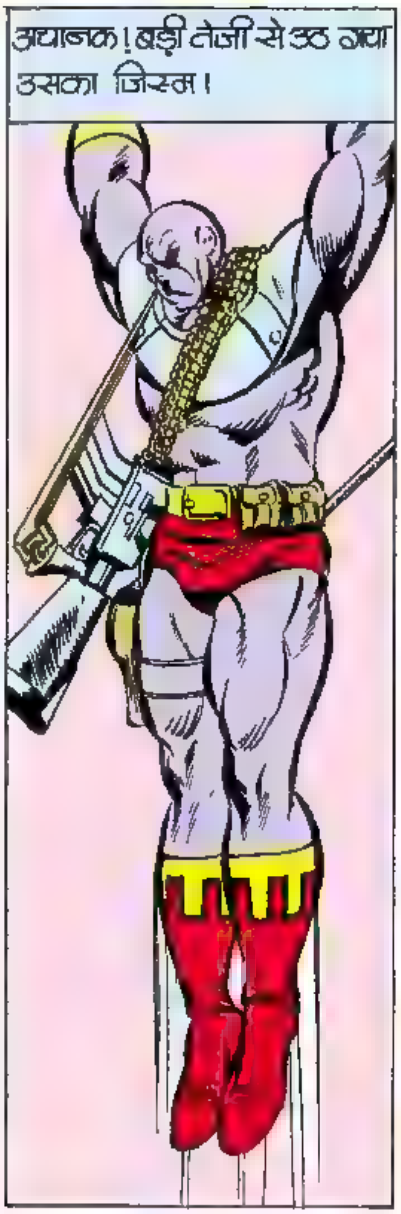
अचानक! बड़ी तेजी से उठ गया उसका जिस्म।

वे तो समझे थे कि उन्होंने पकड़ लिया उस हत्यारे को –
व्हाट नॉन सेन्स! फ...फायर! ग.... गोली चलाओ!
सब खुलों में बदल चुके थे वह करिश्मा देखकर। फायर कौन करता।

जब तक गोलियां उसकी ओर लपकीं, वह पहुंच चुका था उन गोलियों की रेंज के बाहर।
क्...
क्...
क्...
क्...
क्...
लाशों की बारात लगा कर उड़ गया। उफ! इंसान है या प्रेत!

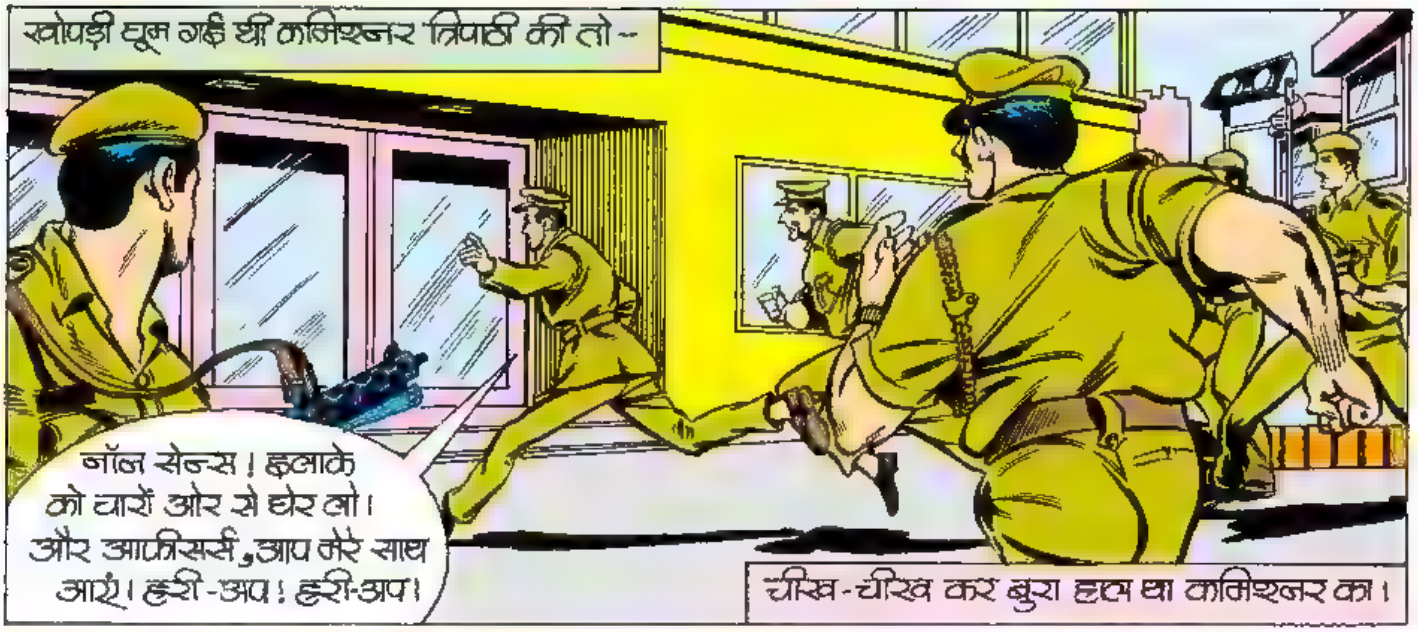
खोपड़ी घूम गई थी कमिश्नर त्रिपाठी की तो –
नॉन सेन्स ! इलाके को चारों ओर से घेर लो। और आफिसर्स, आप मेरे साथ आईए। हरी-अप ! हरी-अप।
चीख-चीख कर बुरा हाल था कमिश्नर का।

छत पर पहुंचकर तो 'गक्क' से दिमाग ही उड़ गया उसका –
नॉन सेन्स ! वो..वो जा रहा है हैलिकॉप्टर में...। उफ ! हम पुलिसवालों के दिमाग को क्या हो गया है ! नॉन सेन्स हैं हम।
फट... फट... फट... फट...

सर ! ये देखिए !
हां, अब यही तो देखना है। मगर क्या देखूं ? नॉन सेन्स ! क्या है तुम्हारे पास ?

गौर से देखिए सर ! मेरे हाथ में रस्सी का गुच्छा है। ट्रांसपेरेन्ट रस्सी का गुच्छा, जिसकी मदद से वो पच्चीसवीं मंजिल तक पहुंचा होगा।

लोहासिंह के चेहरे के जर्रे-जर्रे पर मंडरा रहा था आतंक -

सरदार
सरदार

जकड़े सख्ती के साथ भींचे थे हलकान-सिंह ने -

लोहासिंह ! कोई मनहूस खबर लाया है तो जल्दी से बक दे।

स...स सरदार !

शब्द तक न निकल पा रहे थे लोहा-सिंह के मुंह से।

शोला लपका और समा गया लोहासिंह के ठीक मस्तक के बीच

धूम

दरवाजे के पीछे दिखाई पड़ते साये को देखकर गुर्रा पड़ा हलकानसिंह

हलकानसिंह की मांद में घुस-कर उसे ललकारने की हिम्मत कोई भेड़िया नहीं कर सकता। सामने आ कौन शेर का बच्चा है।

ठीक कहा था हलकानसिंह ने -

कौन हो तुम ?

मुझे पहचानो हलकानसिंह ....

मुझे पहचानो !

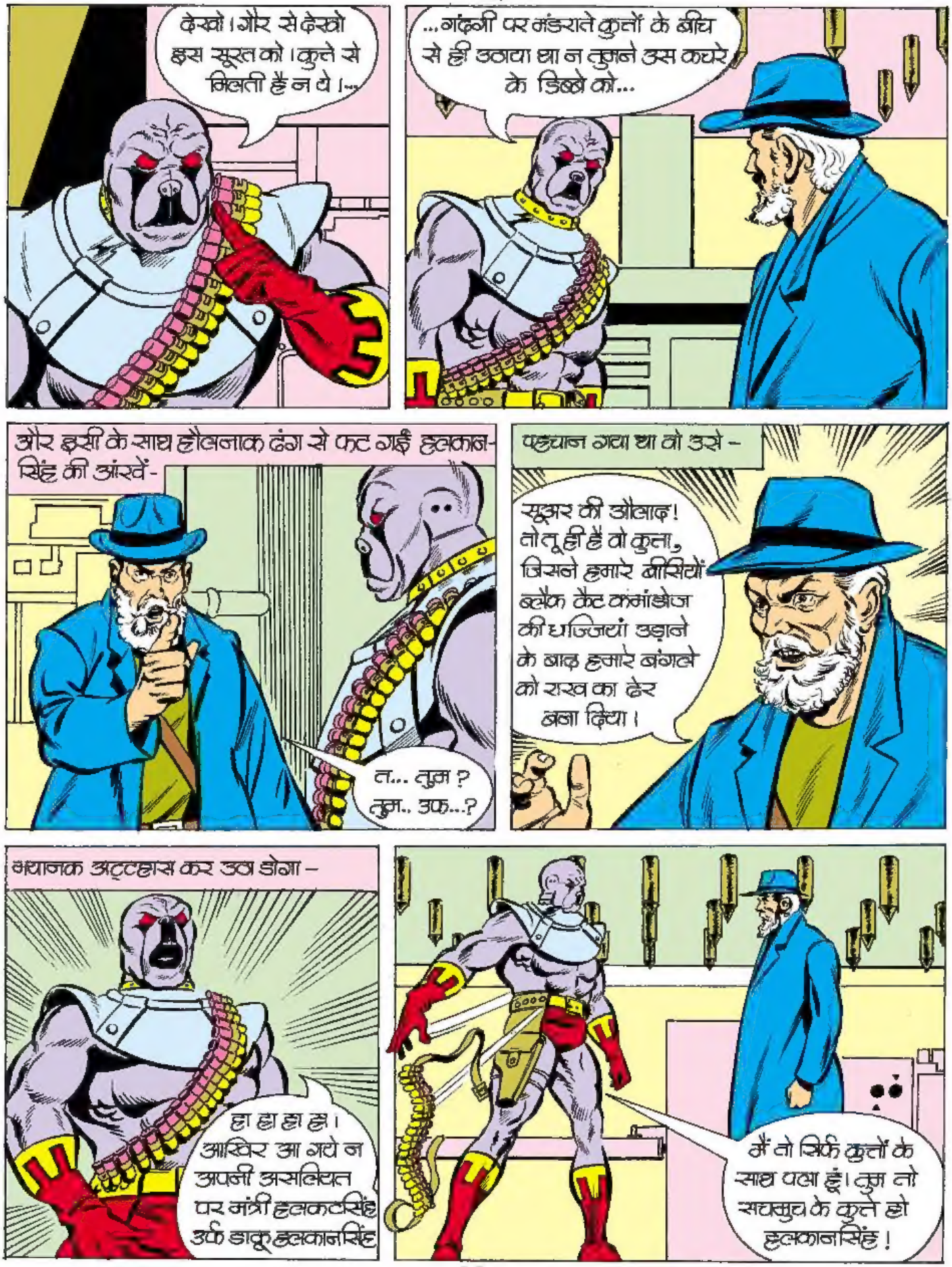
देखो। गौर से देखो इस सूरत को। कुत्ते से मिलती है न ये।...
...गंदगी पर मंडराते कुत्तों के बीच से ही उठाया था न तुमने उस कचरे के डिब्बे को...
और इसी के साथ हौलनाक ढंग से फट गईं हलकान-सिंह की आंखें-
त... तुम ? तुम.. उफ...?
पहचान गया था वो उसे –
सूअर की औलाद! तो तू ही है वो कुत्ता, जिसने हमारे बीसियों ब्लैक कैट कमांडोज की धज्जियां उड़ाने के बाद हमारे बंगले को राख का ढेर बना दिया।
भयानक अट्टहास कर उठा होगा –
हा हा हा हा। आखिर आ गये न अपनी असलियत पर मंत्री हलकटसिंह उर्फ डाकू हलकानसिंह
मैं तो सिर्फ कुत्तों के साथ पला हूं। तुम तो सचमुच के कुत्ते हो हलकानसिंह !

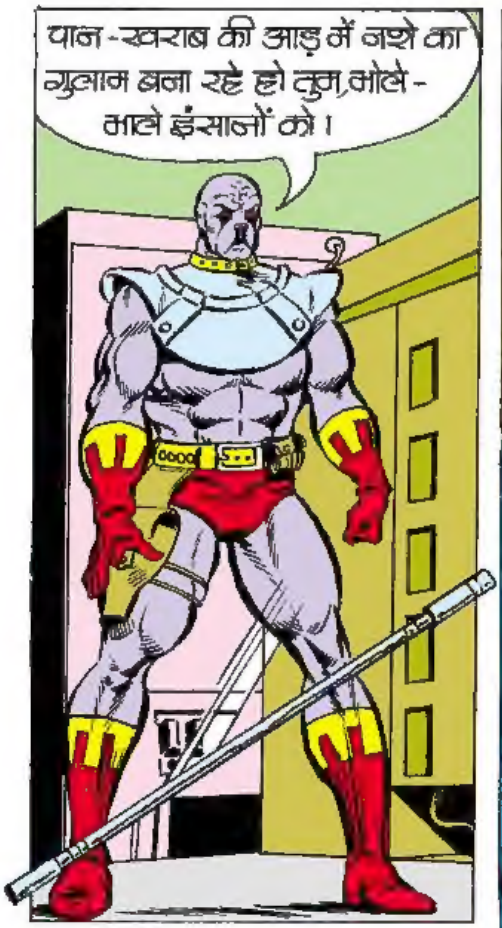
पान-खराब की आड़ में नशे का गुलाम बना रहे हो तुम भोले-भाले इंसानों को।

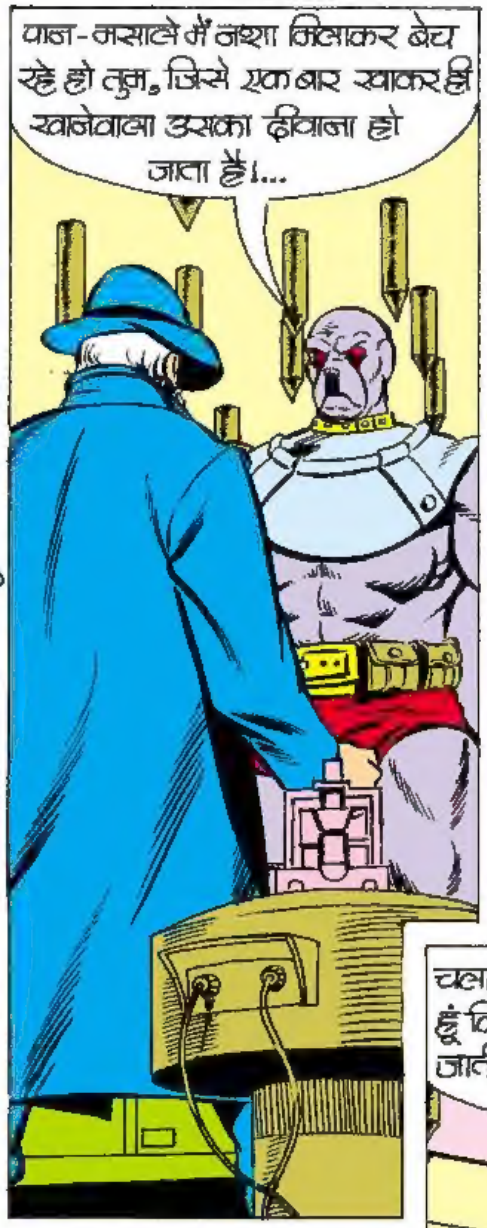
पान-मसाले में नशा मिलाकर बेच रहे हो तुम, जिसे एक बार खाकर ही खानेवाला उसका दीवाना हो जाता है।...

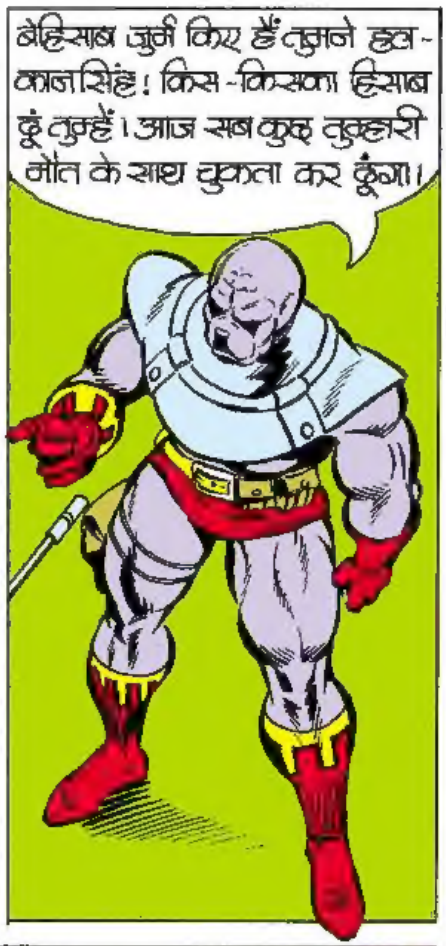
बेहिसाब जुर्म किए हैं तुमने हलकानसिंह! किस-किसका हिसाब दूं तुम्हें। आज सब कुछ तुम्हारी मौत के साथ चुकता कर दूंगा।

हलकानसिंह ने बेल्ट पर लगी वह इकलौती गोली बाहर निकाल ली -
होगा! तेरी तलाश बरसों से थी मुझे। तूने बहुत जख्म दिए हैं मुझे। आज ये गोली लगाएगी उन जख्मों पर मरहम।

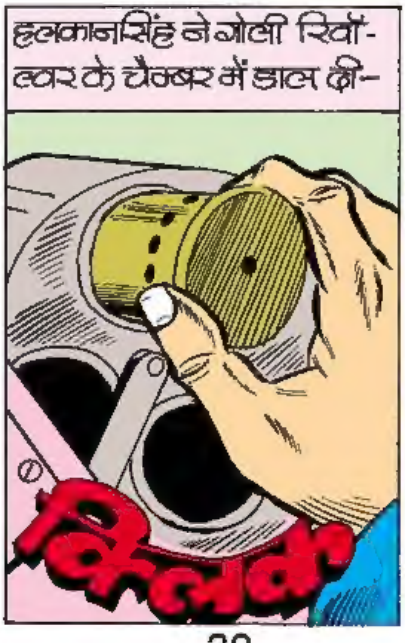
हलकानसिंह ने गोली रिवॉल्वर के चैम्बर में डाल दी-
क्लिक

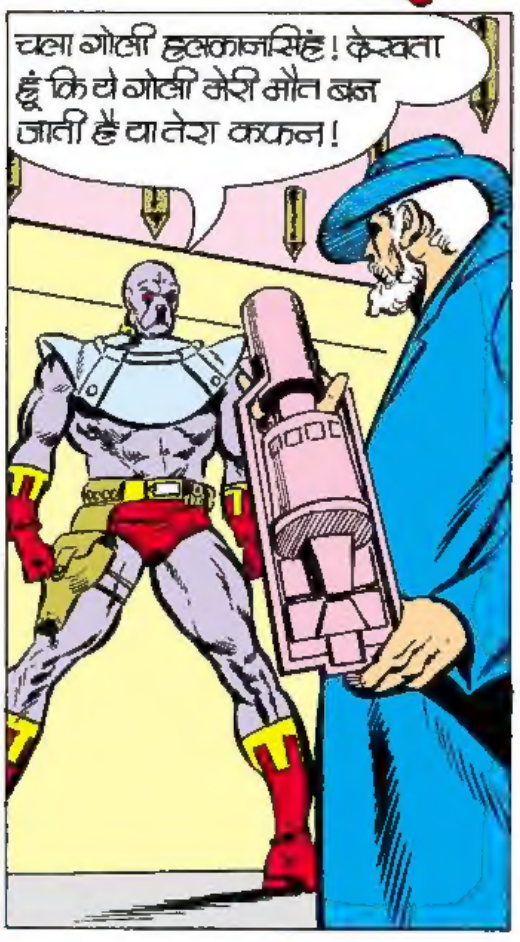
चला गोली हलकानसिंह! देखता हूं कि ये गोली मेरी मौत बन जाती है या तेरा कफन!

ट्रेगर दबा दिया हलकानसिंह ने –

धांय

समा गई गोली डोगा के सीने में –

जबड़े भिंच गए डोगा के –

अब....मेरी बारी... है हलकानसिंह ! अब... मेरी बारी है ।

गले में घुटने लगी हलकानसिंह की आवाज –

आह...

ग....गद्दर... गद्दार का ये कुत्ता , जिसे तुमने जीवन दिया था...

उंह

...आज...आज तुमसे तेरा जीवन छीन लेगा हल... कानसिंह...।

कुत्ते की तरह बाहर निकल आई हलकानसिंह की जीभ –

और –

आ...आओ.., आओ अब्दक चाचा ! देखो ...इस कमीने की लाश बिछा दी है मैंने। वो सब इस कमीने के साथी थे अब्दक चाचा, जिन्हें मैंने अपनी गोलियों से...

किन्तु तूने उसे अपने सीने पे गोली क्यों चलाने दी मेरे बच्चे ?

क्योंकि उसने कुत्ते जीवन देकर जो अहसान किया था वह चुकता हो जाए।

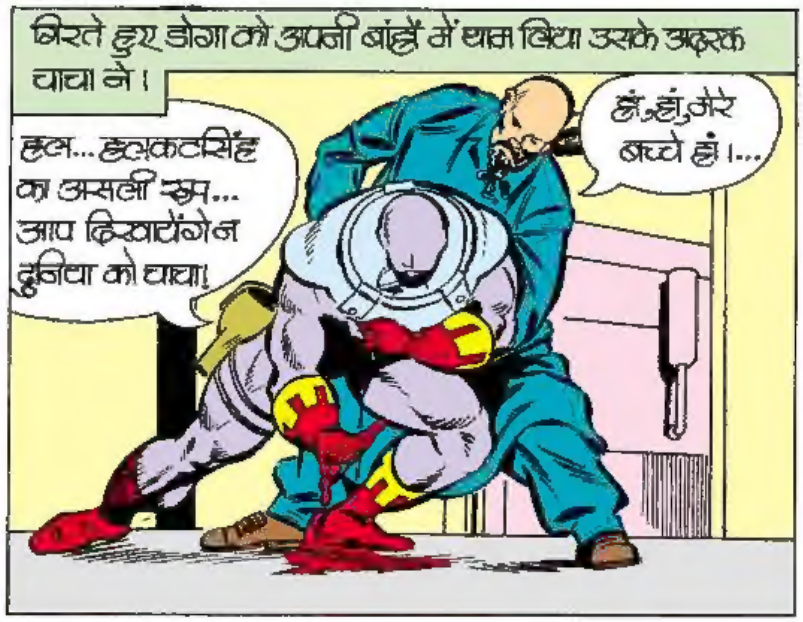

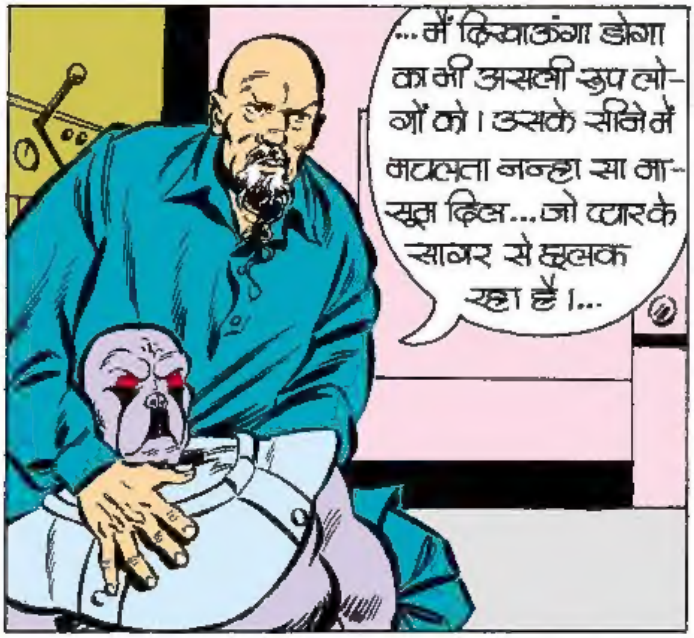

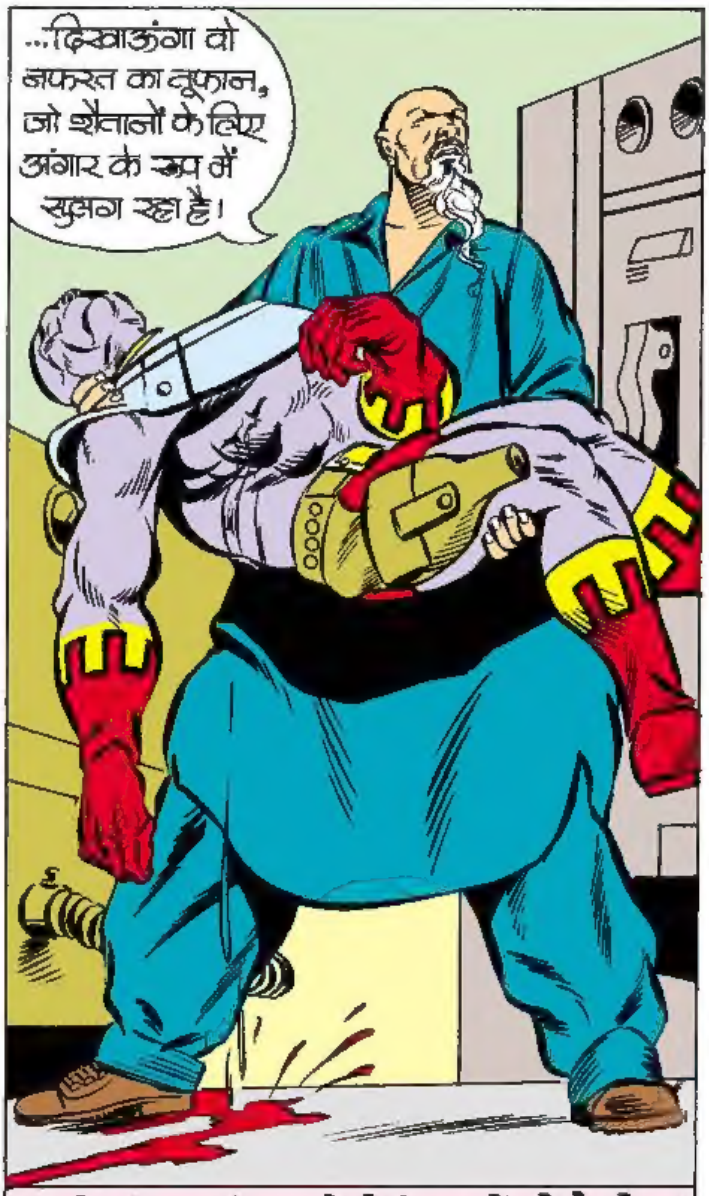

आगे की कहानी जानने के लिए पढ़ें **'ये है डोगा'**

समाप्त